|  |
| --- |
| 18. August 2024 |
| **20. Sonntag im Jahreskreis B** |
| Erste Lesung: Spr 9,1-6; Zweite Lesung: Eph 5,15-20; Evangelium: Joh 6,51-58 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 148, 1-3 | Komm her, freu dich mit uns |
|  | GL 400, 1+2 | Ich lobe meinen Gott |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 126 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 170, 1-3 | Allein Gott in der Höh sei Ehr |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 34,2-3.10-15 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 39, 1 | Kostet, kostet und seht |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 450 | Gottes Wort ist wie Licht |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Wer mein Fleisch isst und mein Blut trinkt,* |
|  | *der bleibt in mir, und ich bleibe in ihm.* |
|  |  |
| Credo: | sprechen |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 187, 1+2 | Wir weihn der Erde Gaben |
|  | GL 470 | Wenn das Brot |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 199 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 209 | Du teilst es aus |
|  | GL 498, 1 | Das Heil der Welt |
|  | GL 762, 3 | O heil’ger Leib, o heil’ges Blut |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 211, 1-3.7+8 | Wir rühmen dich, König |
|  | GL 213 | O heil’ge Seelenspeise |
|  | GL 216, 1+2! | Im Frieden dein |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 453, 1!-4 | Bewahre uns, Gott |
|  | GL 484, 1+2! | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 416, 1+3 | Was Gott tut |